ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.21, No2, April – June, 2026/184

मातृ स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वास्थ्य जागकरूता की स्थितिः सुत्लातनपुर जनपद की ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक अमध्ययन।

रमा कुमारी राठौर एवं सुषमा पाठक

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.291

प्रस्तावना– ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्य किसी भी समाज के विकास का महत्वपूर्ण आधार होता हैं। स्वस्थ्य महिला ही स्वस्थ्य परिवार तथा स्वस्थ्य समाज का निर्माण करती है। जनपद–सुल्तानपुर की ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति, पोषण स्तर तथा स्वास्थ्य संबंधी जागरूता का अध्ययन सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों की अनेक महिलाएं स्वास्थ्य सुविधाओं पोषण तथा स्वास्थ्य शिक्षा से पूर्ण रूप से वंचित है।

मातृ स्वास्थ्य की दृष्टि से देखा जाए तो ग्रामीण महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाएं नही मिल पाती हैं। कई महिलाएं नियमित प्रसव पूर्व जांच, टीकाकरण तथा आयरन की गोलियों का सेवन नही ंकर पाती। आर्थिक कमजोरी, अशिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित उपलब्धता इसके प्रमुख कारण है। सरकारी अस्पतालों एवं आशा कार्यकर्ताओं द्वारा स्वास्थ्य सेवाएं उपलबध कराई जाती हैं। फिर भी जागरूकता की कमी बनी हुई है।

पोषण की स्थिति भी चिंता का विषय हैं। अनेक ग्रामीण महिलाएं कुपोषण, एनीमिया तथा संतुलित आहार की कमी से प्रभावित है। परिवार में महिलाओं को अक्सर सबसे अंत में भोजन मिलता है। जिससे अनेक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं। हरी सब्जियां, दूध, फल तथा प्रोटीन युक्त भोजन का पर्याप्त सेवन न होने के कारण शारीरिक कमजोरी और रक्ताल्पता की समस्या बढ़ती है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण में भी महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण संबंधी समस्याओं का उल्लेख किया गया है।

स्वास्थ्य जागरूकता के क्षेत्र में भी ग्रामीण महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। अनेक महिलाएं स्वच्छता, पोषण, परिवार नियोजन तथा नियमित स्वास्थ्य परीक्षण के प्रति प्र्याप्त जानकरी नही रखती । हालांकि तथा कार्यकर्ता आंगनबाड़ी केन्द्र तथा सरकारी स्वास्थ्य योजनाऐं जागरूकता बढ़ाने का कार्य कर रही हैं। स्वास्थ्य शिविर, टीकाकरण अभियान तथा जन–जागरूकता कार्यक्रमों से महिलाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ रही है।

- **शोध छात्रा : राजा मोहन गर्ल्स, पी0जी0 कॉलेज, अयोध्या (उ0प्र0)**
- **शोध निर्देशका : राजा मोहन गर्ल्स, पी0जी0 कॉलेज, अयोध्या (उ0प्र0)**

अध्ययन का उददेश्यः–

1. सुल्तानपुर जनपद की ग्रामीण महिलाओं के मातृ–स्वास्थ्य की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण महिलाओं के पोषण स्तर एवं पोषण संबंधी व्यवहार का सामाजिक अध्ययन करना है।
3. मातृ स्वास्थ्य एवं पोषण के संबंध में ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य जागरूकता के स्तर का मूल्यांकन करना।
4. मातृ स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वास्थ्य जागरूकता को प्रभावी करने वाले सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों का अध्ययन करना।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित सरकारी योजनाओं (जैसे–जननी सुरक्षा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, पोषण अभियान एवं समेकित बाल विकास सेवा) की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
6. मातृ स्वास्थ्य सेवाओं के उपयेाग में आने वाली प्रमुख बाधारों एवं चुनौतियों की पहचान करना।
7. मातृ स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वास्थ्य, जागरूकता मे सुधार हेतु सामाजिक अध्ययन से व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना।

सामाजिक कारकों का प्रभाव–

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रभावी करने वाले प्रमुख सामाजिक कारक निम्नलिखित है–

1. शिक्षा का निम्न स्तर।
2. परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति।
3. महिलाओं की सीमित निर्णय क्षमता।
4. कम आयु में विवाह एवं गर्भधारण।
5. स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच में कठिनाई।
6. समाजिक एवं सांस्कृतिक पम्परपराए।
7. पोषण संबंधी जानकारी का अभाव।

ये कारक मातृ स्वास्थ्य तथा पोषण की गुणवक्ता को प्रत्यक्ष रू‍प से प्रभावित करते है।

सरकारी योजनाओं की भूमिका–

ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार हेतु प्रमुख योजनाएं–

1. जननी सुरक्षा योजना (JSY)

2. प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत अभियान (PMSMA)
3. पोषण अभियान
4. समेकित बाल विकास सेवा (ICDS)
5. जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम (JSSK)
6. आयुष्मान भारत योजना

इन योजनाओं के माध्यम से निःशुल्क जांच, संस्थागत प्रसव, पोषण परामर्श, टीकाकरण तथा मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही है।

चुनौतियाँ– यद्यपि सरकारी प्रयासों से सुधार हुआ है, फिर भी कुछ प्रमुख चुनौतियाँ बनी हुई है।

1. कुपोषण एवं एनीसिया
2. स्वास्थ्य सेवाओं तथा असमान पहुंच।
3. स्वास्थ्य **संबंधी जागरूकता का अभाव।**
4. **गरीबी एवं बेरोजगारी**
5. **महिलाओं की सामाजिक निर्भरता।**
6. **परिवहन एवं** स्वास्थ्य अवसंरचना की सीमाएं।

सुक्षाव– ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य के सुधार हेतु निम्न सुझााव उपयोगी हो सकते है–

1. महिला शिक्षा को बढावा दिया जाए।
2. पोषण संबंधी जागरूकता अभियान नियमित चलाए जाएं।
3. गर्भवती महिलाओं की समय पर स्वास्थ्य जांच सुनिश्चित की जाए।
4. आयरन, कैल्शियम एवं संतुलित आहार की उपलब्धता बढ़ाइ जाए।
5. आशा एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का नियमित प्रशिक्षण हो।
6. स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से स्वास्थ्य शिक्षा को प्रोत्सहित किया जाए।
7. ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्रों की गुणवत्ता एवं पहुंच में सुधार किया जाए।

सुल्तानपुर जनपद की ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य सुधार के लिए स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, पोषण संबंधी शिक्षा, महिला सशक्तिकरण तथा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाना आवश्यक हैं। सरकार, समाज तथा परिवार के संयुक्त प्रयासों से ही ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सुधार संभव है। एक स्वस्थ्य महिला ही स्वस्थ्य परिवार तथा समृद्ध समाज की आधार शिला होती है।

सारणी–1 सुल्तानपुर जनपद की ग्रामीण महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति (नमूना सर्वेक्षणः 100 महिलाएं)

क्र0सं0	सूचक	संख्या	प्रतिशत
1	संस्थागत प्रसव कराने वाली महिलाएं	72	72%
2	प्रसव पूर्व जांच (ANC) कराने वाली महिलाएं	68	68%
3	एनीमिया से प्रभावित महिलाएं	46	46%
4	संतुलित पोषण प्राप्त करने वाली महिलाएं	42	42%
5	स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी रखने वाली महिलाएं	60	60%
6	आयरन एवं फोलिक एसिड का सेवन करने वाली महिलाएं	55	55%

ग्रामीण महिलाओं का स्वास्थ्य किसी भी समाज के सामाजिक एवं आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण सूचक माना जाता है। मातृ स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वास्थ्य जागरूकता महिलाओं के जीवन स्तर तथा परिवार के कल्याण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। सुल्तानपुर जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति अनेक सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में मातृ स्वास्थ्य, पोषण तथा स्वास्थ्य जागरूकता की स्थिति का सामाजिक विश्लेषण किया गया हैं। **सारणी–1** से स्पष्ट हेाता है। कि 72% महिलाओं ने संस्थागत प्रसव कराया, जबकि 68% महिलाओं ने प्रसवपूर्ण स्वास्थ्य जांच कराई। इससे स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता से सुधार परिलक्षित होता है, किन्तु शेष महिलाओं तक स्वास्थ्य सुविधाएं अभी भी पर्याप्त रूप से नही पहुंच पाई है।

पोषण की दृष्टि से स्थिति चिंताजनक हैं। अध्ययन में 46% महिलाएं एनीनिया से प्रभावित पाई गई तथा केवल 42% महिलाओं को संतुलित आहार उपलब्ध हो सका। गरीबी, अशिक्षा पारिवारिक असमानता एवं पोषण जानकारी का अभाव इसके प्रमुख कारण है।

स्वास्थ्य जागरूकता के संदर्भ में पाया गया कि 60% महिलाओं को सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं की जानकारी थी, जबकि 55% महिलाओं का आयरन एवं फोलिक एसिड की गोलियों का नियमित सेवन करती थीं। आशा कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी केन्द्र एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रमों का संकारात्मक प्रभाव देखने को मिलताहै, तथापि जागरूकता का स्तर अभी भी अपेक्षाकृत कम है।

सामाजिक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा, आय, पारिवारिक निर्णयों में महिलाओं की भागीदारी तथा स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच महिलाओं के स्वास्थ्य को प्रीाावित करने वाले प्रमुख कारक है। ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक रूढ़ियाँ एवं लैगिंक असमानता भी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को बढ़ाती है।

अतः सुल्तानपुर जनपद की ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य स्तर मे ंसुधार हेतु स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार, पोषण शिक्षा, महिला सशक्तिकरण तथा स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन आवश्यक हैं स्वस्थ्य महिला ही स्वस्थ्य परिवार एवं समृद्ध समाज की आधारशिला है।

संदर्भ ग्रन्थः–

1. अंतराष्ट्रिय जनसंख्या विज्ञान संस्थान (JIPS) एवं JCP, (2021),राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5 2019–21), भारत रिपोर्ट, मुम्बई।
2. भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (2024), ग्रामीण स्वास्थ्य सांख्यिकी (Rural Health Statistics), नई दिल्ली।
3. भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, (2024), स्वास्थ्य प्रबंधक सूचना प्रणाली (HMIS) वार्षिक प्रतिवेदन, नई दिल्ली।
4. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (2024), पोषण अभियन्ता (POSHAN अभियान)– वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन, नई दिल्ली।
5. भारत सरकार (2024), प्रधानमंत्री मातृ वेदना योजना– दिशा निर्देश, नई दिल्ली।
6. विश्व स्वास्थ्य संगठन (2023) मातृ स्वास्थ्य एवं पोषण पर वैश्विक प्रतिवेदन।
7. यूनिसेफ, (2023) भारत में मातृ एवं शिशु पोषण रिपोर्ट।
8. रामकृष्णन, उषा एवं अन्य (2012), भारत में मातृ पोषण सुधार हेतु सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप, चुनाौतियो एवं अक्सर।
9. गुप्ता, रेणु एवं अन्य (2016) गर्भवर्ती महिलाओं में मातृ पोषण संबंध ज्ञान एवं दृष्टिकोण का अध्ययन।
10. नमुएन, फुओंग हांग एवं अन्य (2019), उत्तर–प्रदेश में मातृ पोषक व्यवहार एवं उसके निर्धारिक कारक।
11. जोहरी, मीरा एवं अन्य (2016) भारत में मातृ स्वास्थ्य साक्षरता एवं बाल पोषण की स्थिति का अध्ययन।
12. भारत सरकार .योगेन्द्र सिंह – भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन।
13. राम अहूजा – भारतीय समाज, ग्रामीण स्वास्थ्य एवं महिला अध्ययन संबंधी शोध पत्र एवं सरकारी रिपोर्ट।

- **रमा कुमारी राठौर, ईमेल**
- **सुषमा पाठक**